"समावेशी शिक्षा की चुनौतियों का अध्ययन"

विपिन तेवतिया
शोधार्थी
डी०ए०वी० कॉलेज, मुजफ्फरनगर, उ०प्र०

डॉ० वैभव शर्मा
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ उ०प्र०

सारांशिका

विद्यार्थियों की शिक्षा किसी भी स्तर की हो परन्तु उसमें विद्यालयी वातावरण का बहुत बड़ा योगदान होता है। विद्यालय का वातावरण ही अनौपचारिक रूप से बहुत सी शिक्षा स्वयं ही दे देता है। समावेशित शिक्षा के लिए यह चुनौती है कि विद्यालयों का वातावरण सुखद एवं स्वीकार्य नहीं है, इसके अतिरिक्त विद्यालयों में विशिष्ट बालकों, विशिष्ट शैक्षिक क्रियाकलापों इत्यादि आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आवश्यक साजो–सामान, शैक्षिक सहायक उपकरणों, संसाधनों, भवन की बनावट इत्यादि का प्रबन्ध भी स्वीकार योग्य नहीं है। इन सभी के बिना विद्यालय में समावेशित वातावरण का निर्माण करना संभव नहीं है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, इस दिशा में एक प्रभावी संवैधानिक कदम है परन्तु धरातल में इसकी वास्तविकता में अभी भी संदेह है। विद्यार्थियों को शिक्षित करने की सबसे प्रभावी प्रणाली विद्यार्थियों के अनुरूप समावेशित पाठ्यक्रम है परन्तु विद्यार्थियों को खेलने के तरीकों तथा गतिविधियों के माध्यम से सीखने–सिखाने का प्रयास नही किया जा रहा है। समावेशित शिक्षा व्यवस्था के मार्ग में बाधक गैर समावेशित विद्यालय पाठ्यक्रम, विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों, मनोवृत्तियों, आकांक्षाओं तथा क्षमताओं को ध्यान में नही रखते हैं, जिस कारण विद्यार्थियों में विभिन्न योग्यताओं एवं क्षमताओं का विकास नही हो पाता है और विद्यालय के बाहर विद्यार्थी सामाजिक जीवन से नही जुड पाते हैं। समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत विद्यार्थियों को अनेकों समस्याओं का सामना करना पडता है। अतः समावेशी शिक्षा की समस्याओं को ज्ञात करने के लिये प्रस्तुत शोध में समावेशी शिक्षा की चुनौतियों का अध्ययन किया गया है।

मूल शब्द : विद्यालय, समावेशी शिक्षा, सहायक सामग्री, शिक्षक।

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सभी के लिए निष्पक्ष और समावेशी शिक्षा की परिकल्पना करती है, इसमें सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों के विद्यार्थियों, युवाओं और विशेष रूप से लड़कियों पर ध्यान केंद्रित करती है, क्योंकि इनके पीछे छूट जाने का अधिक जोखिम होता है। सरकार के प्रयासों और विभिन्न गैर–सरकारी संगठनों की भागीदारी के बिना भारत में समावेशी शिक्षा का मार्ग कठिन है। शिक्षा एक विशेषाधिकार है और प्रत्येक विद्यार्थी को इसका लाभ मिलना चाहिए, परन्तु यह संकुचित बनी हुई है। समावेशित शिक्षा के उद्देश्यों को सभी विद्यार्थियों तक पहुँचाने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यालय में समावेशित वातावरण हो।

शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। यह सत्य विशिष्ट आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के साथ भी लागू होता है। इस प्रक्रिया में नियमित शिक्षक, विशेष शिक्षक, अभिभावक और परिवार सामुदायिक अभिकरणों के साथ–साथ विद्यालय कर्मचारियों के बीच सहयोग और सहकारिता की भी आवश्यकता है। समावेशित शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत घर से विद्यालय जाते समय विद्यार्थियों को आरम्भ में नए परिवेश में अपने आपको समायोजित करने में असुविधा होती है, इसके कारण विद्यार्थी के आत्मविश्वास में कमी हो जाती है, इसके अतिरिक्त किशोरावस्था के समय होने वाले शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक व सामाजिक परिवर्तनों के कठिन दौर में मार्गदर्शन व निर्देशन प्राप्त नही होना विद्यार्थी के इस संक्रमण काल को और कठिन बना देता है, उचित मार्गदर्शन व निर्देशन प्राप्त नही होने से विद्यार्थी व उसके माता–पिता दोनों ही इन परिवर्तनों के लिए मानसिक, शारीरिक, और सामाजिक रूप से तैयार नही हो पाते हैं। शिक्षा में सहायक तकनीकी उपकरणों के उपयोग से विद्यार्थी जीवन काफी सुगम हो गया है, किन्तु विद्यार्थी जीवन के शैक्षिक पहलू पर तकनीक का प्रभाव व उपयोगिता स्पष्ट परिलक्षित होती नही दिख रही है। समावेशित शिक्षा की सफलता के लिए और इसके प्रचार–प्रसार के लिए शिक्षा व्यवस्था में तकनीक का उपयोग किए जाने की परम आवश्यकता है। दूरदर्शन, कम्प्यूटर, रेडियो, इंटरनेट, मोबाइल फोन, शिक्षण सहायक सामग्री एवं अन्य तकनीकी उपकरणों का उपयोग करके विद्यार्थियों की शैक्षिक सामाजिक अन्तःक्रिया मनोरंजन आदि में प्रभावी भूमिका निभाई जा सकती है। समावेशी शिक्षा के वातावरण हेतु विद्यार्थियों, अभिभावकों तथा शिक्षकों को नयी तकनीकी विधियों से परिचित कराया जाए तथा उनके प्रयोग पर बल दिया जाए। समुदाय की सक्रिय भागेदारी एवं विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति सहभागिता पर बल दिया जाना है, किसी एक के व्यक्तिगत प्रयासों से विद्यार्थियों को शिक्षा की मुख्य धारा में सम्मिलित नहीं किया जा सकता है। समावेशित शिक्षा हेतु यह चुनौती है कि विद्यालयों को सामुदायिक जीवन का केन्द्र नहीं बनाया गया है, जिससे विद्यार्थी की सामुदायिक जीवन की भावना को बल नहीं मिला है। विद्यार्थी इस तथ्य से अनजान है कि उसे एक निश्चित समय तक शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त उसी समुदाय के सक्रिय सदस्य के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करना है। इन उद्देश्य की प्राप्ति के लिए समय–समय पर विद्यालयों में सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद–विवाद, खेल–कूद जैसे मनोरंजक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए और उनमें विद्यार्थियों के अभिभावकों तथा समाज के अन्य सम्भ्रान्त व्यक्तियों को भी आमंत्रित किया जाना चाहिए, जिससे समावेशी शिक्षा के सम्बन्ध

में फैली भ्रान्तियों को दूर किया जा सके।

शोध का औचित्य

प्रस्तुत भाोध पत्र में भाोधकर्ता ने समावेशी शिक्षा की चुनौतियों का अध्ययन किया है, यह भाोध पत्र समावेशी शिक्षा की चुनौतियों को ज्ञात करके समावेशी शिक्षा को और अधिक प्रभाव ाली बनाने में सहायक होगा एवं समावेशी शिक्षा के प्रति धारण भ्रांतियों को दूर करके समावेशीकरण के विचारों को ग्रहण करने के लिए प्रेरित करेगा।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य

1. समावेशी शिक्षा की चुनौतियों का विश्लेषनात्मक अध्ययन।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र विश्लेषनात्मक एवं वर्णनात्मक विधि पर आधारित है इस शोध पत्र में पूर्णत्या द्वितीयक आंकडों का प्रयोग किया गया है, इसमें विभिन्न शोध पत्रों, पत्र–पत्रिकाओं, लेखों एवं पुस्तकों का सन्दर्भ लेते हुए वर्णनात्मक व्याख्या एवं निष्कर्ष निकाले गये हैं।

व्याख्या

प्रस्तुत शोध पत्र का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के उपरान्त समावेशी शिक्षा की चुनौतियों की वर्णनात्मक व्याख्या की गयी है।

समावेशी शिक्षा की चुनौतियाँ

भारतीय शिक्षा प्रणाली समावेशी शिक्षा के युग में प्रवेश कर गई है, वास्तव में यह विकलांग समुदाय को बड़े पैमाने पर अपनाने और सशक्त बनाने की दिशा में एक बहुत बड़ा कदम है, इस प्रणाली में विकलांग बच्चों को किसी भी परिस्थिति में स्कूल में प्रवेश से वंचित नहीं किया जाएगा, परन्तु यहाँ अहम प्रश्न यह है कि क्या हम इसके लिए तत्पर हैं? क्या हम एक समाज के रूप में इस तरह के बदलाव का स्वागत करने के लिए आंतरिक रूप से निष्ठावान हैं? क्या हम माता–पिता के रूप में अपने बच्चे के व्हीलचेयर से चलने वाले दोस्त को घर लाने के लिए तैयार हैं? मौन स्वीकृति आसान है लेकिन वास्तविक क्रियान्वयन करना कठिन है। जब हमारे बच्चे के अलग–अलग विकलांग बच्चों के साथ दोस्ती करने की बात आती है, तो हम कहते हैं, वे अलग हैं, वह इन बच्चों के साथ घुलने–मिलने की कोशिश न करें। जब तक समग्र रूप से संबोधित नहीं किया जाता है, तब तक हम समावेश को जीवन के एक पक्ष के रूप में स्वीकार करने की अनुमति नहीं देंगे। यह रूढ़िवादी मानसिकता है। अतः समावेश के लिए व्यवस्था से बाहर जाने की आवश्यकता है। हम विकलांग विद्यार्थियों की स्थिति के साथ सहानुभूति नही रखते हैं। हम उनकी दैनिक चुनौतियों को समझने की चेष्टा नही करते और अपनी सामाजिक मानसिकता को बदलना भी नही चाहते हैं। हमें ऐसे विद्यार्थियों को एक ठोस आधार प्रदान करने की आवश्यकता है, लेकिन इससे पहले, एक समाज के रूप में, हमें समावेशन की अनुमति के लिए अपनी मानसिक नींव को विकसित करने की भी आवश्यकता है। यह विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को गले लगाने और उन्हें सशक्त बनाने का सही समय है। शिक्षक को ही शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति तथा शैक्षिक संस्थानों की आधारशिला माना गया है। यद्यपि यह सत्य है कि विद्यालय भवन, पाठ्यक्रम, पाठ्यसहगामिक क्रिया, सहायक शिक्षण अधिगम सामग्री आदि सभी वस्तुओं का भी शैक्षिक प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान तथा योगदान होता है, परन्तु शिक्षक ही वह शक्ति एवं स्रोत होता है जो प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करता है।

समावेशित शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षक की जिम्मेदारी और भी अधिक बढ़ जाती है क्योंकि समावेशित शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक केवल अपने आपको शिक्षण कार्य तक ही सीमित नहीं रखता है अपितु विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों का कक्षा में उचित ढंग से समायोजन करना उनके लिए विशिष्ट प्रकार की शैक्षिक सामग्री का निर्माण करना, विद्यालय के अन्य कर्मचारियों, अध्यापकों तथा विशिष्ट अध्यापक से विद्यार्थी की विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सहयोग व सहकार पूर्ण व्यवहार करना, विद्यार्थी को मिलने वाली आर्थिक सुविधाओं का वितरण करना इत्यादि कार्य भी करने पड़ते हैं। इसलिए अध्यापक से यह अपेक्षा की जाती है कि शिक्षण के साथ–साथ उपरोक्त कार्यों में पूर्णता निपुण हो। उसे विशिष्ट सामग्री, विशिष्ट बालकों, विशिष्ट शिक्षा एवं विशिष्ट वातावरण की पर्याप्त जानकारी हो। वह विद्यार्थियों के प्रति स्वस्थ व सकारात्मक अभिवृत्ति रखता हो, उनके मनोविज्ञान को समझाता हो। समावेशी शिक्षा की मूल भावना में सबके लिए विद्यालय की उपलब्धता प्रत्यक्ष रूप से निहित है, एक ऐसा विद्यालय जहाँ सभी विद्यार्थी एक साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं परन्तु सामान्यतः इस तरह की बातें देखने और सुनने में आती हैं कि किसी विद्यार्थी को उसकी विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने में अपनी असमर्थता दर्शाते हुए विद्यालय में प्रवेश देने से मना कर दिया जाता है। समावेशी शिक्षा की सफलता के लिए शिक्षकों में सकारात्मक दृष्टिकोण का प्रवाह अत्यधिक आवश्यक है। विद्यालयों में शिक्षण कार्य कर रहे शिक्षक दिव्यांग बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा देने के पक्ष में नहीं हैं। भारतीय संदर्भ में किए गए विभिन्न अध्ययनों में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि आज भी शिक्षकों में समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का अभाव है। अतः यह आवश्यक है कि अध्यापक–शिक्षा के सस्थानों में शिक्षा के समावेशी मूल्यों को बेहतर ढंग से स्पष्ट किया जाए और सेवा पूर्व एवं सेवारत शिक्षकों में इन मूल्यों का विकास किया जाए। समावेशी शिक्षा की अवधारण इस मान्यता पर आधारित है कि सामान्य बच्चों एवं दिव्यांग बच्चों को एक साथ एक ही कक्षा में सामान्य शिक्षकों द्वारा शिक्षा प्रदान की जा सकती है। इसी मान्यता के आधार पर समावेशी कक्षा के निर्माण की जिम्मेदारी शिक्षकों के कंधों पर आ जाती है परंतु अनेक प्रयासों के फलस्वरूप शिक्षक समावेशी कक्षा का निर्माण करने में सफल नहीं हो सके हैं। शिक्षक समावेशी शिक्षा की सफलता की कुंजी हैं। अतः शिक्षकों को यह स्वीकार करना होगा कि दिव्यांग बच्चों की शिक्षा उनके शिक्षण कार्य का अनिवार्य अंग है। प्रत्येक शैक्षणिक कार्यक्रम की सफलता शिक्षण की गणुवत्ता और शिक्षकों के दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। विभिन्न शोधों में इस बात पर बल दिया गया है कि समावेशी शिक्षा की सफलता के लिए शिक्षकों में निम्नलिखित दो विशेषताओं का होना आवश्यक होता है प्रथम, समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण तथा द्वितीय,

शिक्षकों में समावेशी शिक्षा संबंधी ज्ञान एवं कौशल। निःशक्त बच्चों की स्वीकृति और सामंजस्य भारतीय समाज में काफी कम है, क्योंकि पुराने दृष्टिकोण काफी कठिन एवं रूढ है और धार्मिक विश्वास उनकी जड़ों में इस धारणा के साथ काफी गहराई तक प्रवेश करते हैं कि ये अंतर उनके पिछले जन्मों में पापों के परिणाम हैं। अल्पसंख्यक संस्कृतियों के विरुद्ध पूर्वागृह और मतभेद वाले विद्यार्थियों के साथ भेदभाव होता है, जो उनकी शैक्षिक प्रक्रिया को अवरूध करता है, शिक्षक और विद्यालय कोई अपवाद नहीं हैं– वे उन्हें स्वीकार करने के लिए अनिच्छुक हैं या यदि वे करते भी हैं तो वे इन विद्यार्थियों की सावधानियों के अनुरूप पाठयक्रम अथवा विद्यालय के वातावरण में ढालने के लिए शायद ही कोई प्रयास करते हैं जिससे विद्यार्थी विद्यालय को छोड़ देते हैं और उनका मनोबल टूट जाता है। निःशक्त विद्यार्थियों को प्रायः उनके साथियों द्वारा भेदभाव का सामना करना पडता है एवं विद्यालयों में सभी सामाजिक गतिविधियों से अलग रखा जाता है। शिक्षा प्रणाली की कमियों के स्थान पर विद्यार्थियों को दोष दिया जाता है।

समावेशी शिक्षा में भौतिक बाधाएं मुख्य रूप से वस्तुशिल्प अथवा संरचनाओं के कारण होती हैं, जो निःशक्त बच्चों के विद्यालय में आने में अवरोध उत्पन्न करती हैं, ये अवरोध समाज के भीतर इतनी गहराई से समाए हुए हैं कि जो लोग प्रभावित हैं वे भी उन्हें बाधा नहीं मानते हैं, बल्कि उन्हें अपनी कमियों के स्वाभाविक परिणाम के रूप में देखते हैं, परिणामस्वरूप शारीरिक निःशक्त विद्यार्थियों से उन विद्यालयों में भाग लेने की अपेक्षा की जाती है जो उनके लिए दुर्गम हैं, विद्यालयों में शायद ही कोई निःशक्त अनुकूल शौचालय, कमरे और उचित रैंप हो, स्थानीय सरकारों के पास या तो धन की कमी है या वे वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए सक्षम नहीं है। इन बाधाओं में से एक गैर–लचीला पाठ्यक्रम और शिक्षण भी है, समावेशी शिक्षा कठोर पाठ्यक्रम प्रयोग की अनुमति नहीं देती है, विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग समावेश के लिए एक बड़ी बाधा बनता जा रहा है। इसके अतिरिक्त लिंग और कुछ सामाजिक–सांस्कृतिक समूहों का उदास प्रतिनिधित्व भी समावेश में बाधा डालता है। प्रचलित मूल्यांकन प्रणाली और प्रक्रिया भी परिवर्तन करने में तथा विद्यालय छोड़ने में योगदान करती हैं। शिक्षकों के मध्य ज्ञान और कौशल की कमी कक्षाओं में स्पष्ट संचार को सबसे कम महत्व देती हैं, समुचित कक्षा प्रबंधन, कक्षा के लिए पाठ की योजना बनाने में शिथिलताओं, व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर ध्यान केन्द्रित न करने की ओर ले जाती है, यह समावेशन की कमियाँ हैं। अधिगम भी प्रायः वास्तविक प्रभावशीलता से कम हो जाता है, अधिक काम करने वाले शिक्षक प्रायः एक ही पाठ के लिए अलग–अलग विधियों के साथ पढाने के अतिरिक्त कार्यों से नाराज होते हैं, कई शिक्षकों का मानना है कि निःशक्त बच्चे मुख्यधारा की कक्षाओं में नियमित पाठ्यक्रम का सामना नहीं कर सकते हैं, क्योंकि उन्हें विशेष और अलग–अलग व्यवस्था की आवश्यकता होती है और अन्य बच्चे अलग दिखने और व्यवहार करने वाले बच्चों के साथ सहज नहीं हो सकते हैं। निःशक्त लोगों की समस्या निःशक्तता नहीं है, बल्कि यह है कि समाज उन्हें कैसे देखता है। एक शिक्षक निःशक्त बच्चों की विद्यालय तक पहुँच बढ़ाने के लिए क्या कर सकता है? आज हमारी कक्षाओं में जातीय और भाषाई विविधता की प्रवृत्ति बढी हैं। विविध भाषा विज्ञान से विद्यार्थियों में भाषा को सीखने और पढ़ाए जाने की अपेक्षा की जाती है, जातीय और भाषाई विविधता सीखने के लिए एक उल्लेखनीय बाधा है कि इन विद्यार्थियों को भेदभाव का सामना करना पड़ता है, प्रत्येक नगर अथवा कस्बे में कुछ ऐसे क्षेत्र होते हैं जो औसत से अधिक बेरोजगारी दर से आर्थिक रूप से वंचित रह जाते हैं। उन क्षेत्रों के विद्यालय आर्थिक रूप से वंचित वातावरण को ही प्रतिबिम्बित करते हैं। विद्यार्थी प्रायः उन आवश्यकताओं को वहन करने में असमर्थ होते हैं जो सीखने की प्रक्रिया में बाधा बन जाती है। खराब स्वास्थ्य, हिंसा और अन्य सामाजिक कारक पारंपरिक शिक्षार्थियों के लिए भी अवरोध उत्पन्न करते हैं और ये चुनौतियाँ समावेश को असंभव बना देती हैं। विद्यालयों को प्रायः बुनियादी सुविधाओं, शैक्षिक सामगी और सामान्य समर्थन की कमी का सामना करना पड़ता है। वास्तव में समर्थन और शैक्षिक सामग्री विविध कक्षाओं के लिए एक पूर्व शर्त है, जिसके लिए उचित धन की आवश्यकता होती है। संपूर्ण शैक्षणिक व्यवस्था में संसाधनों की कमी बनी हूई है। हमारे देश में अभी भी विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा को लेकर असमंजस्य की स्थिति है। यहाँ तक कि कुछ नीति निर्माता भी समावेशी शिक्षा की अवधारणा को नहीं समझते हैं और ये नीति निर्माता प्रायः विद्यालय की नीतियों को अधिक समावेशी बनाने के प्रयासों में बाधा डालते हैं। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए शिक्षा की निम्न गुणवत्ता, समावेशी कक्षाओं के लिए उचित रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, बुनियादी ढाँचे की कमी या संरचनात्मक रूप से गैर–अनुकूल विद्यालय, विद्यालय कर्मचारियों के नकारात्मक दृष्टिकोण, कठोर और गैर–समावेशी पाठ्यक्रम और समग्र वातावरण जिनका सीधा सम्बन्ध है, नीति निर्माताओं और कार्यान्वयन अभिकरणों के उदासीन रवैये से समावेशन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। समावेशी शिक्षा की सभी बच्चों तक शैक्षिक पहुँच को सुगम बनाने के लिए सफल उपाय करने अति आवश्यक है।

उपसंहार

समावेशी शिक्षा को भारत सरकार अधिकतम प्राथमिकता दे रही है और इसके सफल कार्यान्वयन के लिए, कानून और नीतियाँ भी बनी हैं लेकिन फिर भी समावेशी शिक्षा के कार्यान्वयन और इसके अभिकरणों के सामने कई अवरोध भी हैं। इन बाधा और मुद्दों के प्रभावी उपाय खोजने के लिए, सबसे पहले इसका विश्लेषण करना होगा। समावेशी शिक्षा के अवरोध में व्यवहार सम्बन्धी अवरोध, वित्तीय अवरोध और नीतिगत अवरोध इत्यादि हैं। समावेशी शिक्षा में शिक्षकों के पास सामान्य शिक्षा कक्षा में मौजूद विकलांग छात्रों की विशेष जरूरतों को सिखाने और प्रबंधित करने के लिए प्रशिक्षण और कौशल नहीं होता है। विकलांग छात्रों की आवश्यकताओं के बारे में शिक्षकों के बीच जागरूकता की कमी से एक सामान्य कक्षा में विकलांग छात्रों की अनदेखी या यहां तक कि विरोध भी होता है और यह ऐसे शिक्षार्थियों के लिए हानिकारक है। एक विशेष स्कूल की तुलना में जो छात्र

केवल कुछ कक्षाओं या निश्चित समय के लिए मुख्यधारा में आते हैं, वे अपने सहपाठियों द्वारा सामाजिक रूप से अस्वीकार हो जाते हैं, ऐसे शिक्षार्थी एक नियमित कक्षा में प्राप्त अतिरिक्त सेवाओं से शर्मिंदा भी महसूस करते हैं, एक विशिष्ट कक्षा में विकलांग छात्रों के सही संयोजन प्राप्त करने के लिए बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है। एक गैर–विकलांग छात्र को शिक्षित करने की तुलना में विकलांगों की शिक्षा की लागत लगभग दोगुनी हो गयी है। समावेशी शिक्षा के दृष्टिकोण को अपनाने वाले स्कूलों को समावेशी शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है जिसके लिए अतिरिक्त वित्तीय संसाधनों को प्राप्त करने में वह सक्षम नहीं होते हैं। वर्तमान में विशेष शिक्षा प्रदान करने की लागत भी काफी अधिक है क्योंकि छात्र–शिक्षक अनुपात कम होना चाहिए, इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रम में विविधता तथा पर्याप्त लचीलापन होना चाहिए ताकि उसे प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमताओं, आवश्यकताओं तथा रुचि के अनुकूल बनाया जा सके।

संदर्भ सूची :

1. बूथ (1996). पर्सपेक्टिव ऑन इनक्लूसन फ्रॉम इंग्लैण्ड, कैम्ब्रिज जर्नल ऑफ, एजुकेशन ।
2. ब्लूम (1998). न्यूरोडाइवर्सिटी– दि अटलांटिक मंथली।
3. मंगल, एस.के. (2012). एजुकेशन एक्सेप्सनल चिल्ड्रनः एन इन्ट्रोडक्शन टू स्पेशल एजुकेशनः दिल्लीः सी.एच.आई लर्निंग।
4. आर्मस्ट्रांग, टी. (2012). न्यूरोडाइवर्सिटी इन दि क्लासरूमः स्ट्रेन्थ–बेस्ड स्ट्रेटिजीस टू हेल्प स्टूडेन्टस विध स्पेशल नीड्स सक्सीड इन स्कूल, लाइफअलेक्जेंड्रिया, ससीडी, एजुकेशन।
5. इग्नू (2017). इंट्रोडक्शन टू डायवर्सिटी, एड इनक्लूजन।
6. https://www.teachingenglish.org.uk/article/what-inclusion-how-do-weimplement-it
7. https://www.cambridge.org/elt/blog/2017/11/15/create-inclusiveclassroom-environment.
8. https://ww2.kqed.org/education/2016/01/04/5-effective-strategies-forthe-inclusive-classroom.
9. https://disabilityfriendlycities.org/references/the-biggest-barriers-toinclusive-education.
10. https://www.dailypioneer.com/2018/columnists/inclusive-education-forwhole-of-india.html.
11. https://nzcurriculum.tki.org.nz/Inclusive-practices/About-this-resource.
12. https://www.thinkingmaps.com/equity-education-matters.
13. https://collect.readwriterespond.com/gonski-2-0-what-would-thesechanges-mean-on-focuswith-nadia-mitsopoulos.
14. https://www.highspeedtraining.co.uk/hub/classroom-equality-diversity.
15. www.rehab council.nic.in Creating the Culturally Diverse Classroom.